3IETF2

## द्वादशः पाठः

# लौहतुला

*प्रस्तुत पाठ विष्णुशर्मा द्वारा रचित 'पञ्चतन्त्रम्' नामक कथाग्रन्थ के 'मित्रभेद' नामक तन्त्र से संकलित है। इसमें विदेश से लौटकर जीर्णधन नामक व्यापारी अपनी धरोहर (तराजू) को सेठ से माँगता है। 'तराजू चूहे खा गए हैं' ऐसा सुनकर जीर्णधन उसके पुत्र को स्नान के बहाने नदी तट पर ले जाकर गुफा में छिपा देता है। सेठ द्वारा अपने पुत्र के विषय में पूछने पर जीर्णधन कहता है कि 'पुत्र को बाज उठा ले गया है।' इस प्रकार विवाद करते हुए दोनों न्यायालय पहुँचते हैं जहाँ धर्माधिकारी उन्हें समुचित न्याय प्रदान करते हैं।*

आसीत् कस्मिंश्चिद् अधिष्ठाने जीर्णधनो नाम वणिक्पुत्रः। स च विभवक्षयाद्देशान्तर गन्तुमिच्छन् व्यचिन्तयत्। ''यत्रदेशेऽथवा स्थाने भोगाः भुक्ताः स्थीयतेः। तस्मिन्विभवहीनो यो वसेत्स पुरुषाधमः''।। तस्य च गृहे लौहघटिता पूर्वपुरुषोपार्जिता तुलासीत्। तां च कस्यचित् श्रेष्ठिनो गृहे निक्षेपभूतां कृत्वा देशान्तरं प्रस्थितः। ततः सुचिरं कालं देशान्तरं यथेच्छया भ्रान्त्वा पुनःस्वपुरमागत्य तं श्रेष्ठिनमुवाच–''भोः श्रेष्ठिन्! दीयतां मे सा निक्षेपतुला।''

स आह–''भोः! नास्ति सा, त्वदीया तुला मूषकैर्भक्षिता'' इति।

जीर्णधन आह–''भोः श्रेष्ठिन्! नास्ति दोषस्ते, यदि मूषकैर्भक्षितेति। ईदृगेवायं संसारः। न किञ्चिदत्र शाश्वतमस्ति। परमहं नद्यां स्नानार्थं गमिष्यामि। तत् त्वमात्मीयं शिशुमेनं धनदेवनामानं मया सह स्नानोपकरणहस्तं प्रेषय'' इति।

स श्रेष्ठी स्वपुत्रमुवाच–''वत्स! पितृव्योऽयं तव, स्नानार्थं यास्यति, तद् गम्यतामनेन सार्धम्'' इति।

अथासौ वणिक्शिशुः स्नानोपकरणमादाय प्रहृष्टमनाः तेन अभ्यागतेन सह प्रस्थितः। तथानुष्ठिते स वणिक् स्नात्वा तं शिशुं गिरिगुहायां प्रक्षिप्य, तद्द्वारं बृहच्छिलयाच्छाद्य सत्वरं गृहमागतः।

पृष्टश्च तेन वणिजा–''भोः! अभ्यागत! कथ्यतां कुत्र मे शिशुर्यस्त्वया सह नदीं गतः''? इति।

स आह–''नदीतटात्स श्येनेन हृतः'' इति।

श्रेष्ठ्याह – ''मिथ्यावादिन्! किं क्वचित् श्येनो बालं हर्तुं शक्नोति? तत् समर्पय मे सुतम् अन्यथा राजकुले निवेदयिष्यामि।'' इति।

स आह–''भोः सत्यवादिन्! यथा श्येनो बालं न नयति, तथा मूषका अपि लौहघटितां तुलां न भक्षयन्ति। तदर्पय मे तुलाम् यदि दारकेण प्रयोजनम्।'' इति।

एवं विवदमानौ तौ द्वावपि राजकुलं गतौ। तत्र श्रेष्ठी तारस्वरेण प्रोवाच–भोः! अब्रह्मण्यम्! अब्रह्मण्यम्! मम शिशुरनेन चौरेणापहृतः'' इति।

अथ धर्माधिकारिणस्तमूचुः –''भोः! समर्पयतां श्रेष्ठिसुतः''।

स आह –''किं करोमि? पश्यतो मे नदीतटाच्छ्येनेन अपहृतः शिशुः''। इति।

तच्छ्रुत्वा ते प्रोचुः – भोः! न सत्यमभिहितं भवता किं श्येनः शिशुं हर्तुं समर्थो भवति?

स आह – भोः भोः! श्रूयतां मद्वचः–

**तुलां लौहसहस्त्रस्य यत्रा खादन्ति मूषकाः।**

**राजन्तत्र हरेच्छ्येनो बालकं, नात्र संशयः।।**

ते प्रोचुः –''कथमेतत्''।

ततः स श्रेष्ठी सभ्यानामग्रे आदितः सर्वं वृत्तान्तं निवेदयामास। ततस्तैर्विहस्य द्वावपि तौ परस्परं संबोध्य तुला–शिशु–प्रदानेन सन्तोषितौ।

## शब्दार्थाः

| | | |
|---|---|---|
| अधिष्ठाने | – | स्थान पर |
| विभवक्षयात् | – | धन के अभाव के कारण |
| लौहघटिता तुला | – | लोहे से बनी हुई तराजू |
| निक्षेपः | – | धरोहर |
| भ्रान्त्वा | – | पर्यटन करके |
| त्वदीया | – | तुम्हारी |
| भवदीया | – | आपकी |
| ईदृक् | – | ऐसा ही |
| एनम् | – | इसे |
| आत्मीयम् | – | अपना |
| स्नानोपकरणहस्तम् | – | स्नान की सामग्री से युक्त हाथवाला |
| वणिजा | – | व्यापारी के द्वारा |
| श्येनः | – | बाज |
| अब्रह्मण्यम् | – | घोर अन्याय |
| समर्पय | – | दो |
| विवदमानौ | – | झगड़ा करते हुए |
| तारस्वरेण | – | जोर से |
| ऊचुः | – | बोले |
| अभिहितम् | – | कहा गया |
| मद्वचः | – | मेरी बातें |
| आदितः | – | आरम्भ से |
| निवेदयामास | – | निवेदन किया |
| विहस्य | – | हँसकर |
| संबोध्य | – | समझा बुझा कर |
| लौहसहस्रस्य | – | लगभग 1 1/2 मन से अधिक लोहा। |

## अभ्यासः

**1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत।**

क) कुत्र गन्तुं वणिक्पुत्रः व्यचिन्तयत्?

ख) स्वतुलां याचमानं जीर्णधनं श्रेष्ठी किम् अकथयत्?

ग) जीर्णधनः गिरिगुहाद्वारं कया आच्छाद्य गृहमागतः?

घ) स्नानानन्तरं पुत्रविषये पृष्टः वणिक्पुत्रः श्रेष्ठिनं किम् उवाच?

ड.) धर्माधिकारिभिः जीर्णधनश्रेष्ठिनौ कथं सन्तोषितौ?

**2. स्थूलपदान्यधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत।**

क) **जीर्णधनः** विभवक्षयात् देशान्तरं गन्तुमिच्छन् व्यचिन्तयत्।

ख) श्रेष्ठिनः शिशुः स्नानोपकरणमादाय **अभ्यागतेन** सह प्रस्थितः।

ग) **श्रेष्ठी** उच्चस्वरेण उवाच – भोः अब्रह्ममण्यम् अब्रह्ममण्यम्।

घ) स्थूल **सभ्यैः** तौ परस्परं संबोध्य तुला–शिशु–प्रदानेन सन्तोषितौ।

**3. अधोलखितानां श्लोकानाम् अपूर्णोऽन्वयः प्रदत्तः पाठमाधृत्य तं पूरयत।**

क) यत्र देशे अथवा स्थाने.....भोगाः भुक्ताः .....विभवहीनः यः.....सः पुरुषाधमः।

ख) राजन्! यत्रा लौहसहस्रस्य ..... मूषकाः ..... तत्र श्येनः ..... हरेत् अत्र संशयः न।

**4. तत्पदं रेखाङ्कितं कुरुत यत्र।**

क) ल्यप् प्रत्ययः नास्ति

विहस्य, लौहसहस्रस्य, संबोध्य, आदाय

ख) यत्र द्वितीया विभक्तिः नास्ति

श्रेष्ठिनम्, स्नानोपकरणम्, सत्त्वरम्, कार्यकारणम्

ग) यत्र षष्ठी विभक्तिः नास्ति

पश्यतः, प्रहृष्टमनाः, श्रेष्ठिनः सभ्यानाम्

**5. सन्धिना सन्धिविच्छेदेन वा रिक्तस्थानानि पूरयत।**

क) श्रेष्ठ्याह = ..... + आह

ख) ..... = द्वौ + अपि

ग) पुरुषोपार्जिता = पुरुष + .....

घ) ..... = यथा + इच्छया

ड.) स्नानोपकरणम् = .....+ उपकरणम्

च) ..... = स्नान + अर्थम्

**6. समस्तपदं विग्रहं वा लिखत–**

| | **विग्रहः** | | **समस्तपदम्** |
|---|---|---|---|
| क) | स्नानस्य उपकरणम् | = | ..... |
| ख) | ..... ..... | = | गिरिगुहायाम् |
| ग) | धर्मस्य अधिकारी | = | ..... |
| घ) | ..... ..... | = | विभवहीनाः |